साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 2, अंक 36, मई(प्रथम), 2018

आरक्षण आखिर क्यों!

पुष्पा मेहरा

स्वतंत्रता के ७० वर्षों बाद जहाँ औद्योगिकीकरण और अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में हमारा देश विकासशील देश की श्रेणी में आ गया है वहीं आरक्षण इसके माथे का कलंक बना हुआ है |जिस आरक्षण का ध्येय वर्गगत, असमानता दूर करना,शिक्षा की सम्भावना का प्रसार करना तथा समस्त देशवासियों को स्कूल-कालेजों में उनके **जातिगत,गरीब व अमीर के आधार पर प्रवेश का निषेध ना होना था,सर्वधर्म-सर्वजाति सम-भाव ही जिसका मन्त्र था वह तो और उलझता ही जा रहा है|हेय-प्रेय से ऊपर उठ कर, वसुधैव कुटुम्बकम ही देश के विकास का सहयात्री मान कर चलने वाले नियम,'रिजर्वेशन' का क़ानून बने ६७ वर्ष से ऊपर हो चुका है किन्तु मेरे विचार** से आरक्षण का जरूरतमंदों को पूरा लाभ अभी तक नहीं मिल सका है |

आरक्षण का विषय हमारे समाज को सदा उद्वेलित करता रहा, मंडल कमीशन लागू होने के बाद समाज में संघर्ष की स्थिति बलवती हो गयी थी,सारी सामाजिक व न्याय व्यवस्था चरमरा उठी,सारा देश आग की लपटों से घिर गया, प्रजातांत्रिक देश का शासक वर्ग अंग्रेजों के 'बाँटो और राज्य करो' के सिद्धांत पर चलने लगा, वोट बैंक की राजनीति ने इस संघर्ष को और अधिक बढ़ावा देने की ठान ली | देखते-देखते आरक्षण शब्द मानव-मानव में जाति व वर्गगत खाईं खोदने में अपनी अहम् भूमिका निभाने-लगा,परिणामस्वरूप अशिक्षित युवक- युवतियों को उनके माता -पिता उन्हें पढाने की अपेक्षा उन्हें और अधिक अकर्मण्य बनाने लगे धीरे - धीरे अब उन पर 'हर्ड लगे न फिटकरी रंग चोखा आये' लोकोक्ति सार्थक होती जा रही है, स्थिति यहाँ तक बिगड़ गई है कि आरक्षण की कोठरी में ज्ञान कराह रहा है | इसका कारण रिजर्वेशन को "ट्रू स्पिरिट" में लागू ना करना ही है | परिणामस्वरूप समाज में भेदभाव अधिक बढ़ा, आरक्षण में 'मेरिट' को ध्यान में नहीं रखा गया, हर जाति-वर्ग के लोग आरक्षण-कोटे में आना चाहते हैं, आरक्षण प्रधान होता जा रहा है ,ज्ञान गौण | बढ़ती मंहगाई और बढ़ती आबादी ! ५ - ६ बच्चों के भोजन की व्यवस्था न कर सकने के कारण माता - पिता बच्चों को अल्पायु में ही मेहनत-मज़दूरी करने में लगा देते हैं जिसके कारण बालश्रम विरोधी कानून बगलें झाँकता रह जाता है | शिक्षण संस्थाओं में उनका दाखिला नाम मात्र का ही होता है , फ़र्ज़ी उपस्थिति व फ़र्ज़ी प्रमाण पात्र के आधार पर बच्चों को ऊँची कक्षाओं में दाखिले तथा ऊँचे पद पर नौकरियाँ मिल जाती हैं जिसका कारण समाज में फैलता भ्रष्टाचार है | आरक्षण राजनीतिक शतरंज का मोहरा बनता जा रहा है आर्थिक पिछड़ेपन को नज़रन्दाज़ करके धनी वर्ग के लोग ही आरक्षण का लाभ उठा रहे हैं साथ ही सामान्येतर बौद्धिक स्तर के छात्र - छात्राएँ आरक्षण-कोटे से उच्च पदों पर आसीन होकर समाज को अपने पेशे से लाभान्वित न करके उल्टा उन्हें हर क्षेत्र में हानि -पहुँचा रहे हैं | फलस्वरूप पिछड़े और निम्नवर्ग में एक ऐसा दूसरा वर्ग उभर के आ गया जो समाज में उच्च वर्ग की स्थिति में होने से पूर्ण रूप से बराबर की स्थिति में हैं और माननीय भी हैं पर आरक्षण का लाभ उन्हें भी मिलता जा रहा है |

१८ ओक्टूबर २०१५ के हिंदुस्तान टाइम्स की रिपोर्ट के आधार पर' मेन्सा इण्डिया आई-क्यू टेस्ट 'से ज्ञात हुआ है कि निर्धन बच्चों में प्रतिभाएँ भरी पड़ी हैं जिनको उभरने का अवसर ही नहीं मिल पाता है | यह कहावत तो बहुत पुरानी है कि 'गुदड़ी में भी लाल' छिपे होते हैं आरक्षण और निर्धनता के कारण प्रतिभावान बच्चे समाज की बढती धारा से जुड़ नहीं पाते साधन सम्पन्न परिवार के अयोग्य बच्चे भी उच्च पदों पर आसीन हो जाते हैं |

भारतीय संविधान के अनुसार सबको स्वतंत्रता व समानता का अधिकार मिला है शिक्षा भी इसी समानता का अंग है | जनसंख्या नियन्त्रण , सबको समान रूप से शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा देना व पूरी ईमानदारी के साथ उसका लाभ उठाने का पूर्ण निश्चय , देश के भीतरी गाँवों में पूर्ण जागृति , इस हद तक शिक्षा का प्रसार-प्रचार करना कि सभी वर्ग के लोग बच्चों को पढ़ाने व उनमें उचित कौशल के विकास का महत्व समझ सकें और उनको पढ़ानेके साथ -साथ उन्हें उनके इच्छित क्षेत्र में कुशल बनायें | यह तभी सम्भव हो पायेगा जब आरक्षण को ही व्यवसाय का हथियार बनाकर उच्च पदों को हासिल कर लेना ही हमारे देश की जनता का ध्येय न हो अपितु कुशलता व योग्यता को ही बच्चों के बौद्धिक स्तर को नापने का पैमाना बनाया जाये , देश की सामाजिक व्यवस्था न्यायपूर्ण हो | आन्तरिक कलह , कूटनीति ,रिश्वतखोरी ,छल- कपट, नकल आदि कुरीतियाँ समाज व देश को विकास का मुखौटा पहना कर उसे पतन के गर्त में न धकेलें |

अंत में मेरे विचार से बौद्धिक कौशल,सामाजिक व आर्थिक नीतियों का समुचित अनुपालन देश को कुशल भविष्य सौंपने में सक्षम हो पायेगा | आरक्षण का आधार प्रतिभा व आर्थिक पिछड़ापन होना चाहिए | समाज की सामान्य धारा से जुड़ने के बाद भी पीढ़ी दर पीढ़ी को आरक्षण कोटे से परे कर देना चाहिए | प्रतिभावान निर्धन छात्र - छात्राओं को छात्रवृतियाँ मिलें। | जहाँ पूर्ण शिक्षा योग्यता व दक्षता होगी वहाँ आरक्षण का प्रश्न ही नहीं उठना चाहिये क्योंकि आरक्षण देश को आन्तरिक स्तर पर पंगु बनाने में मदद कर रहा है न कि उसे सशक्त पाँवों पर खड़ा कर रहा है |

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें